

संपादकीय

महामारी में दिल्ली

रा पूर्णे राजधानी दिल्ली में सिविल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (सीआरएस) की ओर से गुरुवार को जारी किये गये महामारी के दिनों बाले जन्म और मृत्यु से जुड़े अंकड़े हैरान तो नहीं करते, लेकिन इसके कई पहलुओं पर गैर किया जाना चाहिए। मगर उस तरफ बढ़ने से पहले यह देखा जारही है कि ये अंकड़े कई लिहाज से आधे-अधूरे कहे जारेंगे। सीआरएसअंकड़े सिर्फ दर्ज किये गये जन्म और मौत की संख्या बताते हैं। इनसे वह पता नहीं चलता कि जन्म और मृत्यु की इस संख्या में बाहर से अस्थायी तौर पर आये लोगों और यहां के स्थायी निवासियों का क्या अनुपात है। इस अर्थ से आधारित अमुमन बहत होता है जो रजिस्ट्रेशन जनरल अंक इंडिया (आरजीआइ) जारी करता है। चूंकि आरजीआइ ने महामारी की अवधि यारी 2021-22 के सीआरएस डेटा अभी जारी नहीं किये हैं, इसलिए फिलहाल सीआरएसअंकड़ों से ही काम चलाना होगा। कारोना महामारी की अवधि यारी 2020 और 2021 में दिल्ली में दर्ज हुई मौतों की संख्या 28,687 बतायी गयी है, जो 2007 (जब सीआरएस अंकड़े सिर्फ दर्ज किये गये जन्म और मौत की संख्या बताते हैं) से सीआरएस रिकॉर्ड उपलब्ध हैं) से अब तक की सबसे बड़ी संख्या है। जन्मदर का जहां तक सवाल है, तो 2019 में वह प्रति हजार की आवादी पर 18.4 बच्चे की थी, लेकिन 2020 में 14.2 बच्चों पर और 2021 में 14.2 बच्चों पर बढ़ कर 13.1 पर आ गयी। 2022 में बढ़ कर 14.2 बच्चों पर आयी, लेकिन महामारी से पहले के स्तर से काफी नीचे है। ध्यान रहे, दिल्ली में जन्मदर में कमी महामारी से पहले से ही आने लगी थी। जानकार जन्म दर में आयी बढ़तीरी के पीछे कुछ खास बजहें बता रहे हैं। एक तो लॉकडाउन के दौरान अपने गांवों को लौट चुके लोग विष्टि सुखने पर बड़ी संख्या में वापस आ गये। दूसरे, लॉकडाउन के दौरान शुरू हुआ वर्क फ्रॉम होम का फैटर्न जारी रहना भी अहम है, क्योंकि उससे महिलाओं को लगा कि वे वर्कफोर्स में भागीदारी करते हुए परिवार का भी ख्याल रख सकती हैं। मगर बड़ी बात यह है कि इन सबके बावजूद जन्म दर का स्तर नीचा बना हुआ है। सीआरएस के ये अंकड़े जहां स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कई पहलुओं पर रोशनी ढालते हैं, वहीं वह भी बताते हैं कि जनगणना के विस्तृत अंकड़ों की कमी कितनी खलने वाली है। ऐसे में जुरूरी है कि 2021 में होने वाली जनगणना की प्रक्रिया को और देखें। बैरर जल्द से जल्द पूरा कराने की कोशिश की जाये।

सीआरएसअंकड़े सिर्फ दर्ज किये गये जन्म और मौत की संख्या बताते हैं। इनसे यह पता नहीं चलता कि जन्म और मृत्यु की इस संख्या में बाहर से अस्थायी तौर पर आये लोगों और यहां के स्थायी निवासियों का क्या अनुपात है।

और 2021 में और घट कर 13.1 पर आ गयी। 2022 में बढ़ कर 14.2 बच्चों पर आयी, लेकिन महामारी से पहले के स्तर से काफी नीचे है। ध्यान रहे, दिल्ली में जन्मदर में कमी महामारी से पहले से ही आने लगी थी। जानकार जन्म दर में आयी बढ़तीरी के पीछे कुछ खास बजहें बता रहे हैं। एक तो लॉकडाउन के दौरान अपने गांवों को लौट चुके लोग विष्टि सुखने पर बड़ी संख्या में वापस आ गये। दूसरे, लॉकडाउन के दौरान शुरू हुआ वर्क फ्रॉम होम का फैटर्न जारी रहना भी अहम है, क्योंकि उससे महिलाओं को लगा कि वे वर्कफोर्स में भागीदारी करते हुए परिवार का भी ख्याल रख सकती हैं। मगर बड़ी बात यह है कि इन सबके बावजूद जन्म दर का स्तर नीचा बना हुआ है। सीआरएस के ये अंकड़े जहां स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कई पहलुओं पर रोशनी ढालते हैं, वहीं वह भी बताते हैं कि जनगणना के विस्तृत अंकड़ों की कमी कितनी खलने वाली है। ऐसे में जुरूरी है कि 2021 में होने वाली जनगणना की प्रक्रिया को और देखें। बैरर जल्द से जल्द पूरा कराने की कोशिश की जाये।

अभिमत आजाद सिपाही

कांग्रेस की हार के बाद 'इंडिया' अलायंस गठबंधन के बंधन में बढ़े रहना आसान नहीं है। अलायंस के सभी दलों का जोर इस बात पर रहेगा कि विधानसभा चुनाव की हार का आइना दिखाते हुए कांग्रेस को लोकसभा चुनाव में सीटों की शेयरिंग में बैकफूट पर रहा जायेगा। अलायंस के पार्टनर्स के बयानों से यह स्पष्ट है कि चुनाव हारने से कांग्रेस का याजनीतिक वर्जन कमजोर पड़ गया है।

चुनाव में हार से कांग्रेस और 'इंडिया' अलायंस को झटका

योगेंद्र योगी

5 राज्यों के विधानसभा चुनाव में 3 राज्यों में करारी शिक्षण मिलने के बाद कांग्रेस की 'इंडिया' अलायंस में लोकसभा चुनाव में सीटों की दावेदारी कमज़ोर पड़ेगी। राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा से चुनाव हार बैठी कंग्रेस की स्थिति विधानसभा 'इंडिया' अलायंस में अब विधानसभा के बाद कांग्रेस की बात नहीं रही है। चुनाव परिणाम आने के बाद अलायंस के भागीदार राजनीतिक दलों के बयानों से साक है कि क्षेत्रीय दल अपने राजनीतिक प्रभाव बाले राज्यों में कांग्रेस से सीटें शेयरिंग करने के पूरे में नहीं हैं।

तीन राज्यों में हार के बाद भी कांग्रेस सीटों की दावेदारी से पीछे हटेगी, इसकी संभावना नहीं के बराबर है। यदि ऐसा होता है तो कांग्रेस के अस्तित्व पर खतरा खड़ा हो जायेगा। कांग्रेस की हार से इंडिया अलायंस में रस्साकशी तेज होने के आसार हैं।

कांग्रेस की हार के बाद 'इंडिया' अलायंस गठबंधन के बंधन में बढ़े रहना आसान नहीं है। अलायंस के सभी दलों का जोर इस बात पर रहे कि विधानसभा चुनाव की हार की दावेदारी का आइना दिखाते हुए कांग्रेस के गठन के बाद से ही दलों में मुख्यमंत्री और विधायक एक-दूसरे के साथ सीट-बंटवार के सदस्यों के साथ सीट-बंटवार के बाद पर रहने के आसार हैं।

पश्चिम बंगाल में मुख्यमंत्री व तृणमुख सुप्रीमो ममता बनर्जी ने 3 राज्यों में कांग्रेस की हार पर कहा कि इंडिया अलायंस के सदस्यों के साथ सीट-बंटवार के बाद पर रहने के आसार हैं। इंडिया अलायंस के बाद पर रहने के आसार हैं।

पश्चिम बंगाल में मुख्यमंत्री व तृणमुख सुप्रीमो ममता बनर्जी ने 3 राज्यों में कांग्रेस की हार पर कहा कि इंडिया अलायंस के सदस्यों के साथ सीट-बंटवार के बाद पर रहने के आसार हैं।

ममता की तरह सीटीश कुमार की पार्टी के नेता ने 3 राज्यों में चुनाव हारने पर कांग्रेस को नसीहत दे डाली। जद-यू के प्रदेश राजस्थान और छत्तीसगढ़ के अलायंस के बाद दोनों पार्टीयों के नेताओं ने अपना पल्ला झटक लिया है। 5 राज्यों के



कांग्रेस पार्टी के लिए दिवकर यह है कि दक्षिणी राज्यों से उसे लोकसभा में ज्यादा सीटें मिलने की गुंजाइश कम है। पार्टी को सबसे ज्यादा फायदा हिंदी भाषी राज्यों से होता है, क्योंकि 2019 के लोकसभा चुनाव में इन राज्यों में उसका प्रदर्शन सबसे निचले स्तर पर था।

कि जनता तब करेगी कि चेहरा ममता बनर्जी होंगी या राहुल गांधी या अरविंद केजरीवाल या उद्धव ठाकरे। बनर्जी ने कहा कि अगर आपको लगता है कि भाजपा की यह जीत पश्चिम बंगाल में दिखाई देगी, तो मुझे ऐसा नहीं लगता क्योंकि बंगाल का चुनाव बंगाल के मुख्यमंत्री व लड़ा पर लड़ा जायेगा। छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के अलायंस, अजय राय, अमीर पार्टी की तरह सीटीश कुमार की नीतीश कुमार की आमतौर पर रहने के बाद दोनों पार्टीयों के नेताओं ने एक साथ पर रहने की चाही थी। यह इस विश्वास का परिणाम था कि पार्टी विधानसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करेगी। अब कांग्रेस के बाद दोनों पार्टीयों के नेताओं ने एक साथ पर रहने की चाही थी।

कांग्रेस की तरह सीटीश कुमार की पार्टी के नेता ने 3 राज्यों में चुनाव हारने पर कांग्रेस को नसीहत दे डाली। जद-यू के प्रदेश राजस्थान में ज्यादा सीटें मिलने की गुंजाइश कम है। पार्टी को सबसे ज्यादा फायदा हिंदी भाषी राज्यों से होता है। यह जीत पश्चिम बंगाल के अलायंस के बाद दोनों पार्टीयों के नेताओं ने एक साथ पर रहने की चाही थी। समाजीलोक संघर्ष और उद्धव ठाकरे के बाद दोनों पार्टीयों के नेताओं ने एक साथ पर रहने की चाही थी। यह इस विश्वास का परिणाम था कि पार्टी विधायक एक-दूसरे के बिलास ही चुनाव लड़ रहे थे। यू.पी. कांग्रेस अच्छी बात रख रही थी। यह इस विश्वास का परिणाम था कि पार्टी विधानसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करेगी। अब कांग्रेस के बाद दोनों पार्टीयों के नेताओं ने एक साथ पर रहने की चाही थी।

कांग्रेस की तरह सीटीश कुमार की पार्टी के नेता ने 3 राज्यों में चुनाव हारने पर कांग्रेस की व्यस्त होने की चाही थी। यह इस विश्वास का परिणाम था कि पार्टी विधानसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करेगी। अब कांग्रेस के बाद दोनों पार्टीयों के नेताओं ने एक साथ पर रहने की चाही थी।

कांग्रेस की तरह सीटीश कुमार की पार्टी के नेता ने 3 राज्यों में चुनाव हारने पर कांग्रेस की व्यस्त होने की चाही थी। यह इस विश्वास का परिणाम था कि पार्टी विधानसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करेगी। अब कांग्रेस के बाद दोनों पार्टीयों के नेताओं ने एक साथ पर रहने की चाही थी।

कांग्रेस की तरह सीटीश कुमार की पार्टी के नेता ने 3 राज्यों में चुनाव हारने पर कांग्रेस की व्यस्त होने की चाही थी। यह इस विश्वास का परिणाम था कि पार्टी विधानसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करेगी। अब कांग्रेस के बाद दोनों पार्टीयों के नेताओं ने एक साथ पर रहने की

